समकालीन हिंदी साहित्य: उभरती प्रवृत्तियाँ और नवीन विमर्श

पार्वती बारिक

हिंदी प्राध्यापिका, हिंदी विभाग, किस् मानित विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओड़िशा.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18775929

ABSTRACT:

इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में हिंदी साहित्य भूमंडलीकरण, बाज़ारवाद और डिजिटल क्रांति के प्रभावस्वरूप पारंपरिक ढांचों से मुक्त होकर वैश्विक क्षितिज पर विस्तारित हो रहा है। समकालीन लेखन अब आदर्शवाद या मोहभंग तक सीमित न रहकर अस्मिता की खोज और हाशिये के समाज के प्रतिरोध का सशक्त स्वर बन गया है। इसमें दलित, आदिवासी और स्त्री विमर्श के साथ-साथ किन्नर, वृद्ध और पर्यावरण जैसे नवीन विमर्शों की प्रबल उपस्थिति दर्ज की जा रही है। भाषा में संकरता और विधाओं के संलयन ने कथ्य और शिल्प को लोकतांत्रिक बनाया है, जिससे साहित्य सामाजिक हस्तक्षेप का एक प्रामाणिक दस्तावेज सिद्ध हो रहा है।

KEYWORDS:

समकालीन हिंदी साहित्य, अस्मितामूलक विमर्श, भूमंडलीकरण, नवीन विमर्श, हाशिये का समाज.

इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में हिंदी साहित्य अपने पारंपरिक ढांचों से निकलकर एक नए वैश्विक और डिजिटल क्षितिज पर खड़ा है। यह शोध पत्र समकालीन हिंदी साहित्य में आ रहे युगांतरकारी परिवर्तनों का अन्वेषण करता है। अध्ययन का केंद्र न केवल कथा और कविता के बदलते शिल्प पर है, बल्कि उन 'नवीन विमर्शों' (New Discourses) पर भी है जो अब हाशिये से निकलकर मुख्यधारा में आ गए हैं। भूमंडलीकरण (Globalization), बाज़ारवाद और डिजिटल क्रांति ने साहित्य की अंतर्वस्तु (Content) और रूप (Form) दोनों को कैसे प्रभावित किया है, इसका आलोचनात्मक विश्लेषण इस पत्र का उद्देश्य है। विशेष रूप से, यह आलेख आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श, वृद्ध विमर्श और इको-फेमिनिज्म (Eco-feminism) जैसी नई वैचारिक धाराओं की पड़ताल करता है।

'समकालीनता' का अर्थ केवल 'वर्तमान समय' में होना नहीं है, बल्कि अपने समय की धड़कनों, संकटों और चुनौतियों के साथ सीधा संवाद करना है। हिंदी साहित्य में 1990 के बाद का समय, विशेषकर उदारीकरण और भूमंडलीकरण के बाद का दौर, एक निर्णायक मोड़ (Watershed Moment) साबित हुआ है।

बीसवीं सदी का साहित्य जहाँ मुख्य रूप से आदर्शवाद (प्रेमचंद युग) और फिर मोहभंग (नई कहानी/नई कविता) के इर्द-गिर्द घूमता था, वहीं इक्कीसवीं सदी का साहित्य 'पहचान के संकट' (Identity Crisis) और 'अस्मिता की खोज' का साहित्य है। आज का लेखक न केवल गांव के चौपाल की बात कर रहा है, बल्कि महानगरों के अकेलेपन, लिव-इन रिलेशनशिप्स, और साइबर स्पेस में खोई मानवीय संवेदनाओं को भी शब्द दे रहा है।

इस आलेख का उद्देश्य उन बहुआयामी प्रवृत्तियों को रेखांकित करना है जो हिंदी साहित्य को वैश्विक संदर्भ में प्रासंगिक बना रही हैं। गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत समाधि' को बुकर पुरस्कार मिलना यह सिद्ध करता है कि "हिंदी साहित्य अब केवल क्षेत्रीय नहीं, बल्कि वैश्विक विमर्श का हिस्सा बन चुका है।"[1]

समकालीन हिंदी साहित्य को समझने के लिए उस सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है जिसमें यह रचा जा रहा है।

भूमंडलीकरण और बाजारवाद का प्रभाव

बाजारवाद ने हिंदी साहित्य में 'पठनीयता' (Readability) का

संकट और अवसर दोनों पैदा किए हैं। अब साहित्य केवल विद्वानों के लिए नहीं, बल्कि आम उपभोक्ता के लिए भी लिखा जा रहा है। उपन्यासों की भाषा क्लिष्ट हिंदी से बदलकर 'हिंग्लिश' या आम बोलचाल की भाषा की ओर मुड़ी है। चेतन भगत शैली की 'लुगदी साहित्य' (Pulp Fiction) जैसी प्रवृत्ति हिंदी में भी देखी जा रही है, जिसने गंभीर साहित्य के सामने 'लोकप्रियता बनाम गुणवत्ता' की बहस छेड़ दी है।

डिजिटल क्रांति और ब्लॉगिंग

तकनीक ने साहित्य के 'गेटकीपर्स' (संपादक/प्रकाशक) की सत्ता को चुनौती दी है। सोशल मीडिया (फेसबुक, इंस्टाग्राम) और ब्लॉग्स ने 'त्वरित साहित्य' (Instant Literature) को जन्म दिया है।

- लघुकथा का पुनरुत्थान: पाठकों के घटते 'अटेंशन स्पैन' (Attention Span) के कारण लघुकथा और माइक्रो-फिक्शन का चलन बढ़ा है।
- किंडल और ई-बुक्स: कागजी किताबों की जगह ई-बुक्स ने ले ली है, जिससे प्रवासी भारतीय लेखक भी मुख्यधारा से जुड़ गए हैं।

अस्मितामूलक विमर्श: हाशिये का स्वर

समकालीन साहित्य की सबसे बड़ी उपलब्धि 'हाशिये के समाज' का केंद्र में आना है। जिसे हम 'विमर्शवादी साहित्य' कहते हैं, उसने हिंदी की परिधि को विस्तृत किया है।

1. दलित विमर्श: वेदना से चेतना तक

दलित साहित्य अब केवल 'सहानुभूति' का साहित्य नहीं रहा, बल्कि यह 'स्वानुभूति' और 'प्रतिरोध' का साहित्य बन गया है। "ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन' से शुरू हुई यात्रा अब और अधिक सूक्ष्म और विश्लेषणात्मक हो गई है। समकालीन दलित लेखन में अब केवल जातिगत उत्पीड़न नहीं, बल्कि दलितों के भीतर की वर्गीय असमानता और राजनीति पर भी प्रहार किया जा रहा है।"[2] मोहनदास नैमिशराय, सुशीला टाकभौरे और जयप्रकाश कर्दम जैसे रचनाकार इसे नई धार दे रहे हैं।

i. आदिवासी विमर्श: जल, जंगल, जमीन:

आदिवासी विमर्श को दलित विमर्श से अलग करके देखने की प्रवृत्ति बढ़ी है। आदिवासी साहित्य की मूल चिंता 'अस्तित्व और अस्मिता' है। यह विमर्श 'विकास' के नाम पर हो रहे विस्थापन और सांस्कृतिक

विनाश के खिलाफ एक हुंकार है।

प्रमुख स्वर: वंदना टेटे और रमणिका गुप्ता जैसे लेखकों ने आदिवासी दर्शन को स्थापित किया है। निर्मला पुतुल की कविताएँ, जैसे 'नगाड़े की तरह बजते शब्द', आदिवासी स्त्री के संघर्ष और उनकी प्रकृति-केंद्रित जीवन शैली को रेखांकित करती है।

ii. स्त्री विमर्श: देह से देहरी के पार

हिंदी में स्त्री लेखन अब 'रोने-धोने' या 'त्याग की मूर्ति' वाली छवियों को ध्वस्त कर रहा है। मैत्रेयी पुष्पा, अनामिका, और प्रभा खेतान जैसे नामों ने स्त्री की कामुकता (Sexuality), उसके आर्थिक स्वातंत्र्य और निर्णय लेने की क्षमता को केंद्र में रखा है।

नया आयाम: अब 'कॉर्पोरेट फेमिनिज्म' और कामकाजी महिलाओं के द्वंद्व (Work-life balance) भी कहानियों का विषय बन रहे हैं। मृदुला गर्ग और अलका सरावगी के उपन्यासों में स्त्री पात्र अपने शर्तों पर जीवन जीती नजर आती हैं।

नवीन विमर्शों का उदय

समकालीनता की मांग ने कुछ एकदम नए विमर्शों को जन्म दिया है जो पहले हिंदी साहित्य में लगभग अनुपस्थित थे।

i. किन्नर विमर्श

इसे 'थर्ड जेंडर विमर्श' भी कहा जाता है। पहले साहित्य में किन्नरों का चित्रण केवल उपहास या जिज्ञासा के पात्र के रूप में होता था। लेकिन नीरजा माधव के उपन्यास 'यमदीप' और महेंद्र भीष्म के 'मैं पायल' ने किन्नर जीवन की त्रासदी, उनके सामाजिक बहिष्कार और मानवीय संवेदनाओं को गंभीरता से उकेरा है। यह हिंदी साहित्य का सबसे साहसिक और नवीनतम मोड़ है।

ii. वृद्ध विमर्श

बदलते पारिवारिक ढांचे और एकल परिवारों (Nuclear Families) के उदय ने बुजुर्गों के अकेलेपन को एक बड़ी समस्या बना दिया है। "हिंदी साहित्य में इसे 'वृद्ध विमर्श' के रूप में देखा जा रहा है। चित्रा मुद्गल का 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' और ज्ञानप्रकाश विवेक की कहानियाँ वृद्धों की उपेक्षा और संत्रास का मार्मिक दस्तावेज हैं।"[3]

iii. पर्यावरण विमर्श

जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिकी तंत्र का विनाश अब केवल विज्ञान का विषय नहीं है। हिंदी साहित्य में, विशेषकर पंकज बिष्ट और विनोद कुमार शुक्ल के लेखन में, पर्यावरण चिंताएँ स्पष्ट रूप से उभरती हैं। पहाड़ का दर्द, नदियों का सूखना और कंक्रीट के जंगल-ये सब अब कविता और गद्य के मुख्य विषय हैं।

विधाओं का विखंडन और संलयन

समकालीन समय में विधाओं (Genres) की शुद्धता खत्म हो रही है। इसको संपूर्ण रूप से समझने के लिए निम्न बिंदुओं को देखा जा सकता है;

- कथेतर गद्य (Non-fiction): संस्मरण, डायरी और यात्रा-वृत्तांत अब उपन्यास जितने ही लोकप्रिय हैं। अशोक वाजपेयी और विश्वनाथ त्रिपाठी के संस्मरण इसके उदाहरण हैं।
- लंबी कविता: गद्य और पद्य के बीच की दीवार ढह रही है। समकालीन कविताएँ अधिक गद्यात्मक (Prosaic) हो गई हैं, जो जटिल यथार्थ को पकड़ने की कोशिश करती हैं।

भाषा और शिल्प

समकालीन हिंदी साहित्य की भाषा में एक अद्‌भुत लचीलापन आया है;

- जैसे कि संकरता (Hybridity): अंग्रेजी, उर्दू और आंचलिक शब्दों का बेझिझक इस्तेमाल हो रहा है। यह शुद्धतावादियों को खटक सकता है लेकिन यह नए भारत की वास्तविक भाषा है।
- शिल्प: फंतासी (Fantasy) और जादुई यथार्थवाद (Magical Realism) का प्रयोग बढ़ा है। उदय प्रकाश की कहानियाँ (जैसे तिरिछ) यथार्थ और फंतासी का अद्‌भुत मिश्रण प्रस्तुत करती हैं, जो उत्तर-आधुनिक शिल्प का बेहतरीन उदाहरण है।

निष्कर्ष

विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि समकालीन हिंदी साहित्य एक संक्रमण काल से गुजर रहा है। यह साहित्य अब केवल 'साहित्यिकता' के लिए नहीं, बल्कि 'सामाजिक हस्तक्षेप' के लिए लिखा जा रहा है। दलित, आदिवासी, स्त्री और किन्नर विमर्शों ने इसे लोकतांत्रिक

बनाया है, जबकि डिजिटल क्रांति ने इसे सुलभ।

हालाँकि, चुनौतियां भी कम नहीं हैं। बाज़ार के दबाव में सतही लेखन बढ़ रहा है और गंभीर विमर्श कभी-कभी नारेबाज़ी में बदल जाते हैं। फिर भी, अपनी विविधता और समावेशिता के कारण, समकालीन हिंदी साहित्य मानव सभ्यता के वर्तमान संकटों और आशाओं का सबसे प्रामाणिक दस्तावेज है। भविष्य का हिंदी साहित्य तकनीक और संवेदना के संतुलन पर टिका होगा।

कुंजी शब्द: समकालीन साहित्य, अस्मितामूलक विमर्श, भूमंडलीकरण, डिजिटल साहित्य, आदिवासी चेतना, स्त्री विमर्श, उत्तर-आधुनिकता।

अंत्यटीप:

1. Shree, G. (2018). Ret Samadhi. Rajkamal Prakashan. P.No. 25
2. भारती, ए. (2018). समकालीन दलित कहानियाँ : स्वर और सरोकार. स्वराज प्रकाशन. Page no – 89
3. भारती, ए. (2018). समकालीन दलित कहानियाँ : स्वर और सरोकार. स्वराज प्रकाशन. Page no – 56

सहायक ग्रंथ सूची :

1. भारती, ए. (2018). समकालीन दलित कहानियाँ : स्वर और सरोकार. स्वराज प्रकाशन.
2. Bostrom, N., & Yudkowsky, E. (2014). The ethics of artificial intelligence. The Cambridge Handbook of Artificial Intelligence, 316-334.
3. Gupta, R. (2005). Adivasi Swar aur Nai Shatabdi. Radhakrishna Prakashan.
4. Madhav, N. (2002). Yamdeep. Samayik Prakashan.
5. Prakash, U. (1989). Tirich. Vani Prakashan.
6. Shree, G. (2018). Ret Samadhi. Rajkamal Prakashan.
7. Tiwari, R. C. (2019). Hindi Sahitya Ka Itihas. Lokbharati Prakashan.